Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 04, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.04.02.14
Multidisciplinary, Open Access

Crossref DOI Prefix 10.46523

समाज में मध्यवर्ग की अवधारणा

डॉ. मुमताज बानो

सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, शिया पीजी कॉलेज, लखनऊ

सामाजिक वर्गों के विषय में प्रसिद्ध विद्वान जी.डी.एब कोल का मत है कि ''वर्ग' वास्तव में अनेक केन्द्र बिन्दुओं के चारों और स्थित व्यक्तियों का इस रूप में एकत्री भाव है कि प्रत्येक केन्द्र के निकटवर्ती व्यक्तियों के विषय में विश्वासपूर्वक यह कहा जा सके कि वे वर्ग विशेष के सदस्य है, परन्तु जो केन्द्र से दूरी पर अवस्थित है . उन्हें उस वर्ग में रखा जा सकता है । जिसका वह अत्यधिक बढ़ते हुए अनिश्चय के साथ प्रतिनिधित्व करता है । इसके अतिरिक्त एक व्यक्ति एक ही समय में एक से अधिक वर्गों के क्षेत्र में भी अंतर्भूत हो सकता है , फलतः उसे पूर्णरूपेण किसी एक वर्ग में नहीं रखा जा सकता और ऐसे भी लोग है जिन्हें शायद ही किसी वर्ग में स्थान दिया जा सके।''[1]

प्रताप नारायण टण्डन ने वर्ग निर्धारण का आधार आर्थिक समानता मानते हुए लिखा है कि, ''मनुष्यों के उसी समूह या श्रेणी को वर्ग कहेंगे जिनके आर्थिक हितों में कोई असमानता न हो।''[2] तो प्रसिद्ध विचारक गिल्बर्ट लिखते है कि ''एक सामाजिक वर्ग व्यक्तियों का समूह अथवा एक विशेष श्रेणी है, जिसका समाज में एक विशेष पद होता है। यह विशेष पद ही अन्य समूहों से उसके सम्बन्धों को निर्धारित करता है।''[3]

अतः समाज विभिन्न वर्गों का जाल है। समाज का अध्ययन करने के लिए इन वर्गों की जानकारी आवश्यक है । समाज में रहने वाले व्यक्तियों के आर्थिक स्तर को ध्यान में रख कर ही वर्गों का विभाजन किया गया है। प्रत्येक वर्ग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक दूसरे पर आश्रित है । इन वर्गों का आपसी सहयोग ही समाज को मूर्त रूप प्रदान करता है।

समाज की कल्पना करने मात्र से ही वर्गों का स्वरूप हमारे मन में हो जाता है । ये वर्ग समाज वर्ग की सबसे बड़ी विशेषता वर्गों में स्तरण है । अर्थात सभी वर्गों की

Received: 08.11.20201 **Accepted:** 09.12.2021 **Published**: 09.12.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.14
Multidisciplinary, Open Access

सामाजिक स्थिति समान नहीं होती । उनमें उच्च , मध्य , निम्न स्तर होते हैं । यही कारण है कि एक ही व्यवसाय में लगे हुए व्यक्तियों के समूह को हम एक सामाजिक वर्ग नहीं कह सकते ।

क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि एक व्यवसाय में कार्यरत व्यक्तियों का सामाजिक स्तर समान हो । इसका तात्पर्य यह नहीं कि व्यवसाय सामाजिक स्तर के निर्धारण का आधार नहीं है । एक ही व्यवसाय के भीतर अनेक वर्ग हो सकते हैं । उदाहरण के लिए विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक महाविद्यालयों के प्राध्यापक तथा स्कूलों के शिक्षक एक ही व्यवसाय होते हुए भी अलग – अलग सामाजिक वर्गों का निर्माण करते हैं ।

सामाजिक वर्गों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अलग – अलग तरह के विचार प्रचलित हैं । प्राचीन काल से ही विचारक सामाजिक वर्गों के सम्बन्ध में अपने मत व्यक्त करते रहे हैं । समाजशास्त्रियों तथा अर्थशास्त्रियों ने धन , सम्पत्ति , शिक्षा , व्यवसाय , धर्म आदि को सामाजिक वर्गों के निर्धारण का आधार माना है । परन्तु मुख्य आधार धन या सम्पत्ति को ही माना है ।

सुप्रसिद्ध दार्शनिक विचारक ''प्लेटो द्वारा कल्पित समाज की संरचना वर्गीय थी। उसमें नागरिकों को तीन वर्गों में रखा गया था – संरक्षक , सहायक एवं श्रमिक। पुन , संरक्षक को शासक और गैर शासक दो वर्गों में विभाजित किया गया है ।''[4]

पाश्चात्य विचारक अरस्तु ने भी सामाजिक असमानता के सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त किया है । अरस्तु ने कहा है– ''प्रत्येक राज्य में तीन वर्ग होते हैं । एक अत्यधिक धनी वर्ग होता है , दूसरा अत्यधिक गरीब और तीसरा वर्ग माध्यम होता है । मध्य तीन वर्गों में उत्तम है क्योंकि यह वर्ग बुद्धिसंगत सिद्धांतों पर चलता है । जो व्यक्ति सौन्दर्य , शक्ति कुलीनता या धन – दौलत की दृष्टि से उत्तम है , वह बुद्धिसंगत विवेकपूर्ण सिद्धांतों पर नहीं चल सकता। वह या तो उग्र भयंकर अपराधकर्मी हो जाता है या फिर भूर्त , दुष्ट और बदमाश बन जाता है ।''[5]

Received: 08.11.20201 **Accepted:** 09.12.2021 **Published**: 09.12.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.14
Multidisciplinary, Open Access

अरस्तू और मैकियवेली में समय का अंतराल होने पर भी सामाजिक वर्ग के सम्बन्ध में दोनों के व्यक्त विचारों में समानता है । ''परवर्ती सामाजिक दार्शनिक लोक , बर्क , बेन्धम , रूसो , हीगेल आदि भी सामाजिक वर्गो , जन्मजात भेद या निर्मित भेद के आधार पर बने सामाजिक स्तरों के प्रति सचेत थे , तथा इस बात को समझते थे कि इस वैषम्य से समाज में समस्याओं का प्रादुर्भाव हो सकता है।''[6] समाज में फैले इस वैषम्य को नियंत्रित करने के लिए इन विचारकों ने अपना – अपना मत प्रकट किया है।

अट्ठारहवीं उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ होते ही शोषण व अत्याचार पर टिकी कुलीन शासक की प्राचीन व्यवस्था जन क्रांतियों के कारण यूरोप में सभी जगह समाप्त हो रही थी । दूसरी तरफ अमेरिका अपनी नवीन प्रजातांत्रिक व्यवस्था में काफी विकास कर रहा था । कुलीनों के शोषण व अत्याचार के खिलाफ विद्रोह हुए और उसके बदले में सभी मनुष्यों के प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धांत स्थापित हो रहा था । यह मान्यता उत्पन्न हो रही थी कि जीवन की श्रेष्ठ वस्तुओं पर सभी मनुष्यों का समान अधिकार है । उधर पश्चिमी यूरोप में औद्योगीकरण तेजी से बढ़ रहा था । इसके परिणामस्वरूप धन एवं शक्ति पर आधारित कुछ नये सामाजिक वर्ग विकसित हुए ।

कार्ल मार्स ने वर्ग संघर्ष को समाज की केन्द्रीय विशेषता बताते हुए इसे सामाजिक परिवर्तन की प्रमुख प्रक्रिया माना । ''उसने दृढतापूर्वक यह घोषणा की कि जब तक सम्पूर्ण इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है । समाज के उत्पादन ढाँचे में व्यक्तियों की विभिन्न स्थिति या भूमिका के आधार पर ही ये वर्ग विकसित होते है । उदाहरणार्थ कृषि क्षेत्र में तीन मुख्य स्तर है – भूमिपति या बधुआ मजदूर या बटाईदार ओर गुलाम । हस्त – उद्योग अर्थव्यवस्था में गिल्डमास्टर , अपरेन्टिस और घर पर अपना धंधा करने वाले । औद्योगिक अर्थ व्यवस्था में कारखाने के पूंजीपति मालिक और सर्वहारा मजदूरा।''[7]

'वर्ग संघर्ष' के सिद्धांत के प्रतिपादन का श्रेय कार्लमार्क्स और फ्रेडरिक एन्जिल्स को है और इनमें से भी प्रमुख रूप से कार्ल मार्क्स को । इन दोनों लेखकों ने 1859 में दास कैपिटल ' के अंतर्गत कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो में इस सिद्धांत का उल्लेख किया था।'[8]

Received: 08.11.20201 **Accepted:** 09.12.2021 **Published**: 09.12.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 04, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.04.02.14
Multidisciplinary, Open Access

मैक्सवेबर ने मध्यवर्ग को समाजिक वर्ग की संज्ञा दी है । ''वेबर ने प्रथम सम्पत्तिवान वर्ग , द्वितीय सम्पत्तिहीन वर्ग तथा तृतीय सामाजिक वर्ग में अंतिम को अपने सामर्थ्य से किसी भी वर्ग में शामिल होने की स्वतंत्रता मानी है । सम्पत्ति के आधार पर सामाजिक वर्ग के भी पुनः दो उपवर्ग स्वीकार किए हैं उच्च मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्ग।''[9]

विभिन्न मतों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्ग या श्रेणी किसी समाज का आवश्यक एवं अनिवार्य अंग होता है । जिसका निर्माण उस समाज के श्रम , उत्पादन तथा वितरण के साधनों द्वारा होता है । इसके साथ ही व्यक्ति की वंश परम्परा , शिक्षा , आय , रहन – सहन का स्तर तथा व्यक्ति की प्रतिभा भी उसे विशिष्ट वर्ग का व्यक्ति प्रतिष्ठित करने में सहायक होती है ।

नित्य परिवर्तनशील एवं दुरूह सामाजिक व्यवस्था और उसमें मौजूद विविध स्तरीकरणों के सम्बन्ध में हुई इस समाजशास्त्रीय चर्चा– के आलोक में भारतीय समाज व उसके वर्गों का अध्ययन काफी सरल हो जाता है । कुछ विद्वान समाज को छ रू वर्गों में विभाजित करना उपयुक्त समझते हैं । इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्ग जितने अधिक हो समाज के अध्ययन में उतनी सुगमता होती है , पर दो वर्गों के बीच रेखा खींचने की संभावना उतनी ही लुप्त होती जाती है । इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारतीय समाज को 'हिन्दी साहित्य कोश' में तीन वर्गों में विभाजित किया गया है– (1) बुर्जुआ, (2) मध्यवर्ग अर्थात् मिडिल क्लास , (3) निम्नवर्ग'[10] सम्पूर्ण समाज को साधारणत उच्च वर्ग , मध्यवर्ग और निम्न वर्ग तीन भागों में विभक्त करना समीचीन प्रतीत होता है ।

समाज का साधन सम्पन्न वर्ग ही उच्च वर्ग है । इनका जीवन मजदूरों के अम पर ही अवलम्बित होता है । किन्तु धन के बल पर यह वर्ग सरकारी मशीनरी का सहयोग प्राप्त कर जनसामान्य को आक्रांत करता है । दलित वर्ग के बहते आंसुओं के लिए यही वर्ग उत्तरदायी है । धन – वैभव के कारण समाज में अपना श्रेष्ठ स्थान सिद्ध करता हुआ ऐश्वर्य एवं विलासी जीवन जीने का आदी होता है । उच्च वर्ग में सामाजिक मान्यताओं के

Received: 08.11.20201 **Accepted:** 09.12.2021 **Published**: 09.12.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 04, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.04.02.14
Multidisciplinary, Open Access

प्रति स्नेह का भाव कम ही रहता है । यह वर्ग अपनी इच्छा के अनुसार ही सामाजिक मानदण्डों का प्रयोग करता है । इस वर्ग में पूंजीपति विशेषकर उद्योगपति शामिल हैं ।

पूँजीपति शब्द की उद्‌भावना अर्थव्यवस्था के समाजवादी आलोचकों ने उन्नीसवीं शताब्दी में की थी । ''पूँजीवाद वैयक्तिक सम्पत्ति ओर पूंजी का समर्थक है । मार्क्स के अनुसार पूंजीवादी सभ्यता एवं संस्कृति का एकमात्र आधार अर्थवाद ही है । इसके अनुसार प्राचीन सभ्यता एवं सम्बन्धों का अंत हो जाता है । पिता – पुत्र , पति – पत्नी , शिक्षक – शिष्य आदि के परम्परागत सम्बन्ध ही शेष रह जाते हैं । इस वर्ग में आवश्यकता से अधिक धन सम्पन्न लोग सम्मिलित हैं । प्रधानतया पूँजी के स्वामी पूंजीपति ही उच्च वर्ग का निर्माण करते हैं।''[11]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उच्च वर्ग समाज का वह भाग है जो सामाजिक दृ ष्टि से श्रेष्ठ माना जाता है तथा धन – वैभव के कारण समाज में विलासी जीवन व्यतीत करता है ।

मध्यवर्ग पूँजीपति तथा मजदूर वर्ग के बीच का वर्ग है जो न तो अधिक धनवान है कि उद्योगों को चला सके , न इतना गरीब कि पेट भरना मुश्किल हो । मध्यवर्ग का उदभव सीधे – सीधे औद्योगिक क्रांतियों से जुड़ा हुआ है , जिन्होंने विश्व की अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव डाला ।

मध्यवर्ग अन्य दो वर्गो की तुलना में संख्या की दृष्टि से बड़ा है । इसीलिए मध्यवर्ग को समाज की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है । भारतवर्ष में मध्यवर्ग के उदय का दायित्व अंग्रेजी साम्राज्य पर है । अमृतलाल नागर के शब्दों में , ''अंग्रेजी पढ़कर भारत में एक नया काला अंग्रेज तैयार हुआ , पर ठीक – ठीक अंग्रेजी सरकार की धारणा के अनुसार सभी अंग्रेजी पढ़ने वाले ऐसे न बने । अंग्रेजी के अध्ययन ने उन्हें अपना पुराना ओर विदेशों का नया ज्ञान वैभव प्रदान करके कट्टर भारत भक्त , स्वतंत्रता प्रिय, न्यायी और विवेकशील बना दिया । ये भारतीय ही हमारे नए राष्ट्रनिर्माता बने । हमारा आधुनिक मध्यम वर्ग इन्हीं अंग्रेजी पढ़े – लिखे , स्वस्थवेता भारतीय और काले अंग्रेजों का है।''[12]

Received: 08.11.20201 **Accepted:** 09.12.2021 **Published**: 09.12.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.14
Multidisciplinary, Open Access

मध्यवर्ग समाज का सबसे बड़ा वर्ग है । आज सबसे अधिक अंतर्द्वद से ग्रसित मध्यवर्ग है , क्योंकि वह एक साथ परिवर्तन और स्थिरता का वरण करना चाहता है । एक तरफ तो वह आधुनिक और विचारशील होने का दावा करता है पर दूसरी तरफ वह उतना ही दकियानूसी दिखाई देता है। उसकी आय तो सीमित है पर इच्छाएं अधिक है । इसलिए वह दिखावा अधिक करता है । दिखावा करके वह अपने आप को चाहे कैसा भी साबित करने की कोशिश करें पर वह मन ही मन आहत होता है ।

निम्नवर्ग एक ऐसा वर्ग है जो सामाजिक ढाँचे के बोझ से दब रहा है । जिसके पास श्रम को छोड़कर उत्पादन का कोई दूसरा साधन नहीं होता । उच्च वर्ग ने आतंक फैलाकर इसके रक्त को चूसा है । गरीबी की मार से पीडित ये कृषक – मजदूर कुली बुनिहार सभी ओर से शोषण का शिकार रहे हैं , जी तोड़कर मेहनत करने पर भी वे दो वक्त के भोजन को तरसते हैं । 'हिन्दी साहित्य कोश' में निम्नवर्ग के सम्बन्ध में लिखा है – ''यह समाज का वह भाग है, जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का शोषण किया जाता है । इस वर्ग के अंतर्गत किसान , मजदूर आते हैं।''[13]

निम्न वर्ग अपनी आर्थिक स्थिति के कारण विद्रोह भी नहीं कर सकता । लेकिन वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक अवश्य होता है । वर्तमान निम्नवर्गीय लोगों में डॉ . मोहिनी शर्मा अर्थ चेतना पाती है । वे लिखती है, ''समाज में निम्न वर्ग में स्वतंत्रता पूर्व एक तो अर्थ चेतना दिखाई नहीं देती थी . किन्तु अब यह वर्ग भी अर्थाकांक्षी बनने लगा है । इसके सामने मध्यवर्ग और उच्च वर्ग है जिनकी स्थिति को प्राप्त करना इसका लक्ष्य है।''[14]

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि हमारे देश में अधिकांश लोग निम्नवर्ग में आते हैं । जो शोषित , पीडित , नंग – धडंग रहते हैं , जी तोड़ मेहनत करने पर भी भूखे रहते हैं । धन के अभाव के कारण इस वर्ग में निरक्षरता पाई जाती है । बाल मजदूरी भी इसी वर्ग से संबंधित है । शिक्षा प्राप्त करने में समय की बर्बादी समझते हुए मजदूरी करना निम्न वर्ग के लोग बेहतर समझते हैं । निम्नवर्गीय जीवन अधिकतर समस्याओं का ही केन्द्र होता है ।

Received: 08.11.20201 **Accepted:** 09.12.2021 **Published**: 09.12.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 04, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.04.02.14
Multidisciplinary, Open Access
Crossref DOI Prefix 10.46523

रोटी , कपड़ा और मकान जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निम्नवर्गीय परिवार आजीवन जुटे रहते हैं । फिर भी कई बार इनमें से किसी कमी के रहते हुए ही वे अपना जीवन बिता देते हैं ।

संदर्भ सूची :

1. हेमराज निर्मम , हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग , पृसं –14
2. प्रताप नारायण टण्डन , हिन्दी उपन्यास में वर्ग भावना , पृ.स. – 36
3. डॉ . मूलचन्द गौतम, हिन्दी नाटक की भूमिका (मध्यवर्ग के संदर्भ में). पृ . ख सं –23
4. श्रीनाथ सहाय , सफेदपोश भारतीय मध्यवर्ग , पृ.सं. – 5
5. अस्तु , पोलिटिक्स , पृ.स. – 190
6. भूपसिंह भूपेन्द्र , मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी उपन्यास . पृ.सं –5
7. श्रीनाथ सहाय , सफेदपोश भारतीय मध्यवर्ग , पृ.सं. – 7
8. वही ,
9. भूपसिंह भूपेन्द , मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी उपन्यास , पृ.सं. – 5
10. धीरेन्द्र वर्मा , हिन्दी साहित्य कोश – भाग –1 . पृसं . – 612
11. डॉ. उर्मिला गंभीर , प्रतापनायण श्रीवास्तव के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन , पृसं –12
12. अमृत लाल नागर , साहित्य और संस्कृति , पृ.सं. – 113
13. सं . धीरेन्द्र वर्मा , हिन्दी साहित्य कोश (भाग –1) , पृ.सं. – 449
14. डॉ . मोहिनी शर्मा , हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य , पृ.सं. – 168

Received: 08.11.20201 **Accepted:** 09.12.2021 **Published**: 09.12.2021

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.